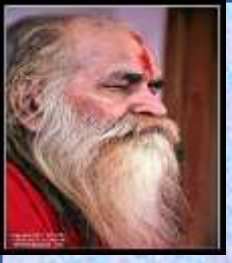

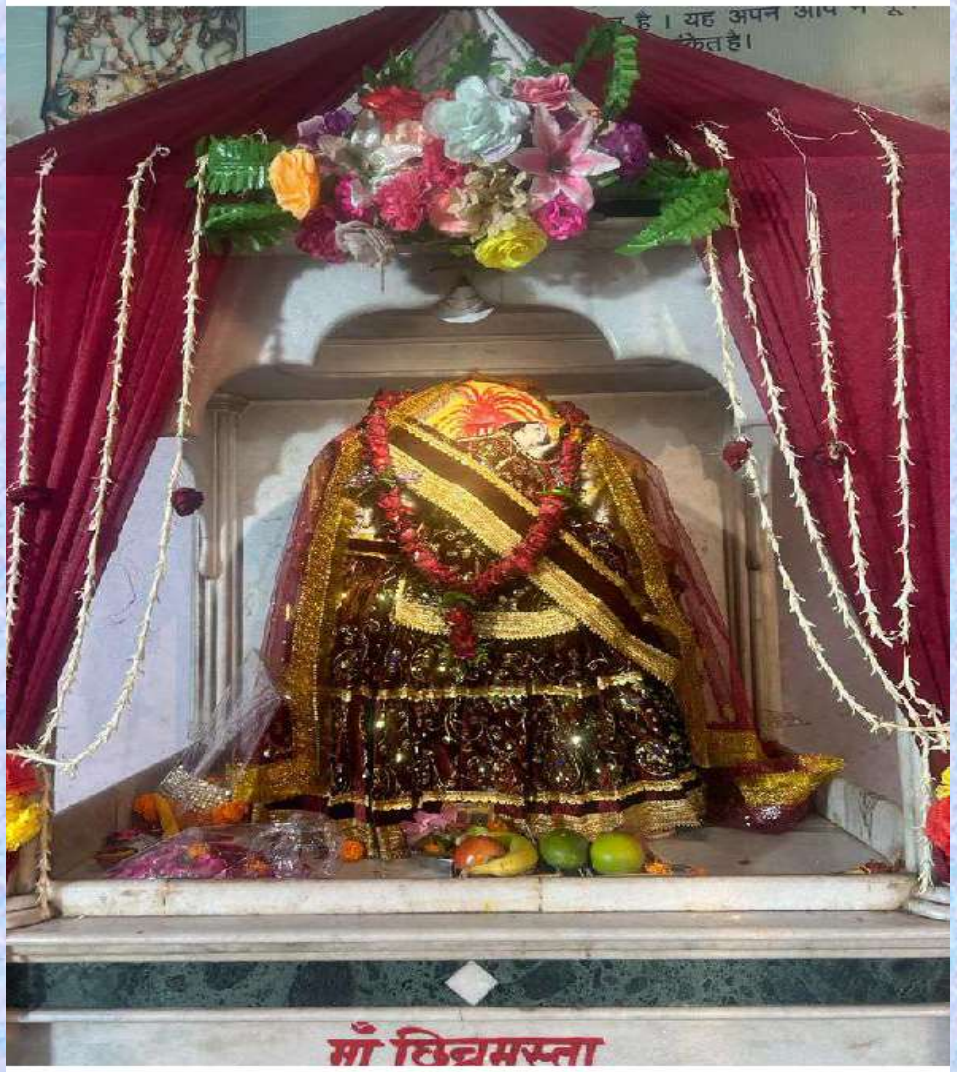

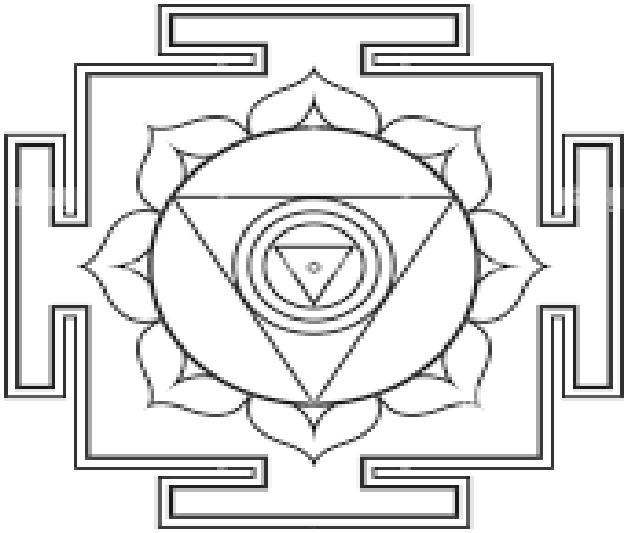

सौजन्य: मां पाताल भैरवी मन्दिर, श्री बर्फानीधाम, राजनांदगांव, छत्तीसगढ़, भारत

श्री छिन्नमस्ता यन्त्र : पञ्चम महाविद्या

परिवर्तन शील जगत् का अधिपति कबन्ध है और उसकी शक्ति ही छिन्नमस्ता है । विश्व की वृद्धि-ह्रास तो सदैव होती रहती है । जब ह्रास की मात्रा कम और विकास की मात्रा अधिक होती है, तब भुवनेश्वरी का प्राकट्य होता है । इसके विपरीत जब निर्गम अधिक और आगम कम होता है, तब छिन्नमस्ता का प्राधान्य होता है ।

भगवती छिन्नमस्ता का स्वरूप अत्यन्त ही गोपनीय है । इसे कोई अधिकारी साधक ही जान सकता है । महाविद्याओं में इनका पाँचवा स्थान है । इनके प्रादुर्भाव की कथा इस प्रकार है- एक बार भगवती भवानी अपनी सहचरी जया और विजया के साथ मन्दाकिनी में स्नान करने के लिये गयीं । स्नानोपरान्त क्षुधाग्नि से पीड़ित होकर वे कृष्ण वर्ण की हो गयीं । उस समय उनकी सहचरियों ने भी उनसे कुछ भोजन करने के लिये माँगा । देवी ने उनसे कुछ समय प्रतीक्षा करने के लिये कहा । थोड़ी देर प्रतीक्षा करने के बाद सहचरियों ने जब पुनः भोजन के लिये निवेदन किया, तब देवी ने उनसे कुछ देर और प्रतीक्षा करने के लिये कहा । इस पर सहचरियों ने देवी से विनम्र स्वर में कहा कि 'माँ तो अपने शिशुओं को भूख लगने पर अविलम्ब भोजन प्रदान करती है । आप हमारी उपेक्षा क्यों कर रही हैं ?' अपने सहचरियों के मधुर वचन सुनकर कृपामयी देवी ने अपने खड्ग से अपना सिर काट दिया । कटा हुआ सिर देवी के बायें हाथ में आ गिरा और उनके कबन्ध से रक्त की तीन धाराएँ प्रवाहित हुईं । वे दो धाराओं को अपनी दोनों सहचरियों की ओर प्रवाहित कर दीं, जिसे पीती हुई दोनों प्रसन्न होने लगीं और तीसरी धाराओं को देवी स्वयं पान करने लगीं । तभी देवी छिन्नमस्ता के नाम से प्रसिद्ध हुईं ।

ऐसा विधान है कि आधी रात अर्थात् चतुर्थ संध्या काल में छिन्नमस्ता की उपासना से साधक को सरस्वती सिद्ध हो जाती हैं । शत्रु-विजय, समूह-स्तम्भन, राज्य-प्राप्ति और दुर्लभ मोक्ष-प्राप्ति के लिये छिन्नमस्ता की उपासना अमोघ है । छिन्नमस्ता का आध्यात्मिक स्वरूप अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । छिन्न यज्ञशीर्ष की प्रतीक ये देवी श्वेतकमल-पीठपर खड़ी हैं । दिशाएँ ही इनके वस्त्र हैं । इनकी नाभि में योनिचक्र है । कृष्ण (तम) और रक्त (रज) गुणों की देवियाँ इनकी सहचरियों हैं । ये अपना शीश काटकर भी जीवित हैं । यह अपने-आप में पूर्ण अन्तर्मुखी साधना का संकेत है ।

विद्वानों ने इस कथा में सिद्धि की चरम सीमा का निर्देश माना है । योगशास्त्र में तीन ग्रन्थियाँ बतायी गयी हैं, जिनके भेदन के बाद योगी को पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है । इन्हें ब्रह्मग्रन्थि, विष्णुग्रन्थि तथा रुद्रग्रन्थि कहा गया है । मूलाधार में ब्रह्मग्रन्थि, मणिपूर में विष्णुग्रन्थि, तथा आज्ञाचक्र में रुद्रग्रन्थि का स्थान है । इन ग्रन्थियों के भेदन से ही अद्वैतानन्द की प्राप्ति होती है । योगियों का ऐसा अनुभव है कि मणिपूर चक्र के नीचे की नाड़ियों में ही काम और रतिका मूल है, उसी पर छिन्ना महाशक्ति आरुढ़ है, इसका ऊर्ध्व प्रवाह होने पर रुद्रग्रन्थिका भेदन होता है ।

छिन्नमस्ता का वज्र वैरोचनी नाम शाक्तों, बौद्धों तथा जैनों में समान रूप से प्रचलित है। देवी की दोनों सहचरियाँ रजोगुण तथा तमोगुण की प्रतीक हैं, कमल विश्वप्रपञ्च है और कामरति चिदानन्द की स्थूलवृत्ति है। बृहदारण्यक की अश्वशिर-विद्या, शाक्तों की हयग्रीव विद्या गाणपत्यों के छिन्नशीर्ष गणपति का रहस्य भी छिन्नमस्ता से ही सम्बन्धित है। हिरण्यकशिपु, वैरोचन आदि छिन्नमस्ता के ही उपासक थे। इसीलिये इन्हें वज्र वैराचनीया कहा गया है। वैरोचन अग्नि को कहते हैं। अग्नि के स्थान मणिपूर में छिन्नमस्ता का ध्यान किया जाता है और वज्रानाड़ी में इनका प्रवाह होने से इन्हें वज्र वैरोचनीया कहते हैं। श्रीभैरवतन्त्र में कहा गया है कि इनकी आराधना से साधक जीवभाव से मुक्त होकर शिवभाव को प्राप्त कर लेता है। (उपरोक्त लेख गीताप्रेस गोरखपुर से साभार....)

दशमहाविद्याओं में भगवती छिन्नमस्ता का पाँचवा स्थान है परमपरानुसार कहीं-कहीं इन्हे तीसरा अथवा छठवां स्थान में भी रखा गया है। इनका एक नाम प्रचण्डचण्डचण्डिका अथवा प्रचण्डचण्डिका भी है। जो आद्यशक्ति महामाया कई विद्याओं के स्वरूप में षोडशी आदि बनकार संसार का पालन करती हैं वही अन्तकाल में छिन्नमस्ता बनकार नाश कर डालती हैं। यहाँ भगवती छिन्नमस्ता के **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा** - मन्त्र से पूजन विधान दिया गया है जो कि श्रीशंकराचार्य-परम्परान्तर्गत् है। मन्त्रमहोदधि तथा अन्य ग्रन्थों में 17 अक्षरों या 19 अक्षरों के मन्त्र भी प्राप्त होते हैं अतः पूजन-विधान में अपने गुरु से प्राप्त मन्त्र को आगे दी गई पूजा पद्धति में मूलमन्त्र के स्थान पर प्रयुक्त कर सपर्या-अनुष्ठानादि कार्य किया जा सकता है। प्रस्तुत पद्धति में जिस मन्त्र का विधान दिया जा रहा है उसके ऋषि भैरव हैं, छन्द सम्राट्छन्द है, बीज ह्रीं है, शक्ति स्वाहा है तथा देवता श्रीछिन्नमस्ता हैं। भगवती छिन्नमस्ता के यन्त्र में छः आवरणों की पूजा होती है, यन्त्र में क्रमशः भूपुर, अष्टदल पद्म, षट्कोण और त्रिकोण होता है। पूजा का क्रम भूपुर से आरम्भ करते हुए त्रिकोण मध्य समाप्त होती है। यह विद्या शिव द्वारा कीलित है अतः मन्त्र का जाप करने के पूर्व ॐ ह्रीं ॐ का 108 जाप कर लेने से मन्त्र कीलनमुक्त होकर सिद्धिदायक होता है। अलग-अलग ग्रन्थों में यन्त्र के प्रकार भिन्न हैं, जैसे मन्त्र महार्णव में नव आवरणों का पूजा क्रम है और इसमें तीन रेखाओं वाला भूपुर त्रिकोण के बाहर त्रिवृत्त और पुनः त्रिकोण है जबकि मन्त्रमहोदधि में छः आवरणों का पूजनक्रम है।